Dr. M. K. Jha.
Dept. of Sociology
V.S.J college Rajnagar

B.A part-1
Paper-11
Social Thinker

Question- इमाइल दुर्खीम के आत्महत्या के सिद्धान्त की समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

Ans- इमाइल दुर्खीम का आत्महत्या का सिद्धान्त समाजशास्त्रीय चिन्तन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। दुर्खीम के अनुसार आत्महत्या किसी व्यक्तिगत कारक का परिणाम नहीं होती है बल्कि आत्महत्या एक सामाजिक तथ्य व सामाजिक घटना है अतः इसके कारणों की खोज सामाजिक संरचना और संगठन के तत्वों में ही करनी चाहिए। दुर्खीम के अनुसार आत्महत्या का सामाजिक पर्यावरण के विभिन्न दशाओं के बीच का सम्बन्ध अधिक प्रत्यक्ष और स्पष्ट होता है वही जैविकीय और भौतिक दशाएँ आत्महत्या का एक अनिश्चित और अस्पष्ट सम्बन्ध है। आत्महत्या, बेरोजगारी, निर्धनता, और मानसिक असन्तुलन एवं जलवायु के कारण नहीं होती, बल्कि सामाजिक अवलम्ब दबाव एवं ऊपर के सामाजिक परिस्थिति एवं पर्यावरण के प्रभावों का फल है।

दुर्खीम के अनुसार आत्महत्या एक सामाजिक तथ्य है। अतः दुर्खीम आत्महत्या का विश्लेषण सामाजिक आधार पर किया है इनके अनुसार जब समूह एवं पर्यावरण व्यक्तियों पर अप्रत्यक्ष दबाव डालता है तब व्यक्ति अकेलापन, निराशा, असुरक्षा एवं अतृप्ति की भावना से पीड़ित हो जाते हैं, जो परिस्थिति सामूहिक जीवन से उखाड़ फेंकती है और व्यक्ति आत्महत्या करने के लिए विवश हो जाते हैं।

दुर्खीम के अनुसार आत्महत्या सामाजिक प्रेरणा का परिणाम है। व्यक्ति में निराशा, उदासीनता एवं सामाजिक बुराई समाज की उत्पन्न परिस्थितियों का देन होता है जिससे व्यक्ति का नैतिक सन्तुलन - सामूहिक तादात्म दोनों कमजोर पड़ जाती है। जो आत्महत्या के प्रेरक परिणाम माना जाता है।

आत्महत्या एक गतिशील तथ्य है भिन्न भिन्न समाजों में परिस्थितियों के अनुसार आत्महत्या की दर कम या अधिक होती है। दुर्खीम के अनुसार समूह की एकता की मात्रा, धार्मिक भावनाएँ, संख्याएँ, निमंत्रण की गति आत्महत्या का संख्यात्मक विवेचना का आधार बनता है जैसे -

1. आत्महत्या की दर प्रत्येक वर्ष एक सी रहती है।
2. सर्दियों की तुलना गर्मी में आत्महत्या अधिक होती है।
3. महिलाओं की अपेक्षा पुरुष अधिक आत्महत्या करते हैं।
4. अधिक आयु कम आयु वालों से अधिक आत्महत्या करते हैं।
5. गाँव की अपेक्षा शहरों में आत्महत्या का दर अधिक है।
6. सैनिक योग्य ग्राम जनता की अपेक्षा अधिक आत्महत्या करते हैं।
7. कैथोलिक धर्म से अधिक प्रोटेस्टेण्ट धर्म वाले आत्महत्या करते हैं।
8. विवाहित के बजाए अविवाहित परित्यक्त एवं विधुर अधिक आत्महत्या करते हैं।
9. विवाहित में निःसंतान वाले अधिक आत्महत्या करते हैं।

Scanned with Cam

दुर्खीम ने आत्महत्या को प्रेरणा देने वाली विभिन्न दशाओं के आधार पर आत्महत्या के तीन प्रमुख प्रकारों का उल्लेख किया है जैसे-

1. अहमवादी आत्महत्या - (Egoistic Suicide)

जब व्यक्ति में व्यक्तिवादी स्वभाव का जन्म होता है तब वह समाज के मुख्य धारा से अलग हो जाता है वह अपने स्वार्थ, सुख और समय को महत्व देता है इस प्रकार का स्वभाव समाज से पृथकता, पारिवारिक एवं असंगठनशीलता में बदल जाती है और व्यक्ति के अहम पर चोट पड़ता है फलतः वह आत्महत्या कर लेता है दुर्खीम के अनुसार पश्चिमी समाजों में अहमवादी आत्महत्याएं अधिक होती है। अतएव, सामाजिक घनिष्ठता की कमी, एकान्तवास, सामाजिक सम्पर्क अहमवादी आत्महत्या का मुख्य कारण है

2. परार्थवादी आत्महत्या - (Altruistic Suicide) सामूहिक हित के लिए आत्म बलिदान की भावना से प्रेरित होकर जो आत्महत्या की जाती है उसे दुर्खीम परार्थी आत्महत्या कहा है। जैसे सतीप्रथा तथा जापान की हारा-कीरी (Harakiri) प्रथा परार्थी आत्महत्या के उदाहरण है परार्थी आत्महत्या नैतिक आधार और मनोवैज्ञानिक आधार पर किए जाते है। अर्थात महान उद्देश्य एवं कर्तव्य बोध के लिए परार्थी आत्महत्या समाज में मिलते है।

3. अप्रमाणिक आत्महत्या - Anomique suicide

- असाधारण तथा आकस्मिक सामाजिक परिस्थितियों से उत्पन्न होनेवाली निराशा या अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव व्यक्ति एकाएक करता है तो उनके मस्तिष्क में असन्तुलन व विसंगति पैदा होता है फलत व्यक्ति इस अस्थिर दौर में जो आत्महत्या करता है वह अप्रमाणिक आत्महत्या है।

Coser ने इसे नैतिक शून्यता का अभाव कारण माने है वहीं Sorokin आदर्श नियम पर आघात का होना कारण माने हैं।

अतएव यह कहा जा सकता है कि दुर्खीम सामाजिक घटना, दशा, परिस्थिति एवं पर्यावरण के आधार पर आत्महत्या सिद्धान्त का समाजशास्त्रीय चिन्तनधारा को जन्म दिया है। क्योंकि इनके विचार में कुछ कमी भी है जैसे।

I. आत्महत्या में व्यक्ति की मानसिक संरचना अथवा व्यक्तित्व सम्बन्धी कारक का योगदान होता है इस पर दुर्खीम मौन रहे हैं जो एक कमी है।

II. आत्महत्या का दर समितियों में एकसमान लागू नहीं होता है।

III. आत्महत्या का कारण सामाजिक ही नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक होता है।

फिर भी दुर्खीम आत्महत्या सिद्धान्त समाजशास्त्री चिन्तन पर आधारित है।

Scanned with Cam